# शिव पुराण

महर्षि वेदव्यास द्वारा रचित शिव पुराण हिंदू धर्म के अठारह महापुराणों में से एक अत्यंत महत्वपूर्ण और व्यापक रूप से पढ़ा जाने वाला ग्रंथ है। पुराणों की सूची में इसका चतुर्थ स्थान है, और यह विशेष रूप से भगवान शिव की महिमा, भक्ति और तत्त्वज्ञान का विस्तारपूर्वक वर्णन करता है। शैव परंपरा में इसका विशेष स्थान है, क्योंकि इसमें शिव की अद्वितीय लीला, उपदेश, स्तुति, और भक्तों के प्रति उनकी कृपा का विस्तार से उल्लेख किया गया है। इस ग्रंथ का उद्देश्य न केवल शिव के अलौकिक स्वरूप को प्रकट करना है, बल्कि भक्ति, धर्म और मोक्ष मार्ग की राह दिखाना भी है।

## परिचय

शिव पुराण शैव मत से संबंधित एक प्रमुख ग्रंथ है, जिसमें भगवान शंकर की महिमा, स्वरूप, उपासना और रहस्य का विस्तारपूर्वक वर्णन किया गया है। यह पुराण छह खंडों में विभाजित है और इसमें कुल 24,000 श्लोक संकलित हैं। इसमें भगवान शिव के विभिन्न रूपों, अवतारों, ज्योतिर्लिंगों, भक्तों और भक्ति मार्ग का सुंदर और गहन विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है। शिव पुराण में देवों के देव महादेव के कल्याणकारी स्वरूप, रहस्यों, महिमा और उपासना का सविस्तार विवेचन किया गया है।

इस ग्रंथ में भगवान शिव की भक्ति और महिमा के साथ-साथ उनकी पूजा-पद्धति, ज्ञानवर्धक आख्यान और शिक्षाप्रद कथाओं का मनोरम वर्णन किया गया है। भगवान शिव को सर्वोच्च सत्ता, स्वयंभू, शाश्वत, विश्व चेतना और ब्रह्मांडीय अस्तित्व का आधार बताया गया है। अन्य पुराणों में भी भगवान शिव को त्याग, तपस्या, वात्सल्य और करुणा की मूर्ति माना गया है, जो सहज रूप से प्रसन्न होते हैं और अपने भक्तों को मनोवांछित फल प्रदान करते हैं।

परंतु शिव पुराण में विशेष रूप से भगवान शिव के जीवन चरित्र, उनके रहन-सहन, विवाह और उनके पुत्रों की उत्पत्ति का विस्तृत विवरण मिलता है। यह ग्रंथ शिवभक्तों के लिए आध्यात्मिक मार्गदर्शन का अमूल्य स्रोत है और मोक्ष प्राप्ति की ओर अग्रसर होने का पथ दर्शाता है। इस पुराण में 6 खण्ड हे, जो निम्नलिखित है।

1. विद्येश्वर संहिता
2. रुद्र संहिता
3. कोटिरुद्र संहिता

4. कैलास संहिता
5. वायु संहिता
6. उमा संहिता

# शिव पुराण में 12 ज्योतिर्लिंग

शिव पुराण के कोटिरुद्र संहिता में भगवान शिव के बारह ज्योतिर्लिंगों का विस्तृत वर्णन मिलता है। इन शिवलिंगों में स्वयं भगवान शिव का साक्षात वास माना गया है। सनातन धर्म में इन 12 ज्योतिर्लिंगों का पूजन अत्यंत शुभ और मोक्षदायक माना गया है। प्रत्येक ज्योतिर्लिंग की अपनी विशेषता, महिमा और पौराणिक कथा है।

## 12 पवित्र ज्योतिर्लिंगों के नाम और स्थान:

1. **सोमनाथ ज्योतिर्लिंग –** गुजरात के सौराष्ट्र क्षेत्र में स्थित यह ज्योतिर्लिंग सबसे प्राचीन और पृथ्वी का प्रथम ज्योतिर्लिंग माना जाता है। इसकी स्थापना स्वयं चंद्रदेव ने की थी।
2. **मल्लिकार्जुन ज्योतिर्लिंग –** यह ज्योतिर्लिंग आंध्र प्रदेश में कृष्णा नदी के तट पर श्रीशैल पर्वत पर स्थित है।
3. **महाकालेश्वर ज्योतिर्लिंग –** यह मध्य प्रदेश के उज्जैन में स्थित एकमात्र दक्षिणमुखी ज्योतिर्लिंग है। यहां की भस्म आरती विश्वभर में प्रसिद्ध है।
4. **ओंकारेश्वर ज्योतिर्लिंग –** मध्य प्रदेश के मालवा क्षेत्र में स्थित यह ज्योतिर्लिंग ॐ के आकार में बहती नदी और पर्वत से सुशोभित है।
5. **केदारनाथ ज्योतिर्लिंग –** यह उत्तराखंड के रुद्रप्रयाग जिले में हिमालय की केदार चोटी पर स्थित है और चार धामों में से एक है।
6. **भीमाशंकर ज्योतिर्लिंग –** यह महाराष्ट्र के पुणे जिले के सह्याद्रि पर्वत पर स्थित है और इसे भीमा नदी के उद्गम स्थल के रूप में भी जाना जाता है।
7. **काशी विश्वनाथ ज्योतिर्लिंग –** यह उत्तर प्रदेश के वाराणसी में स्थित है और इसे विश्वेश्वर महादेव के नाम से भी जाना जाता है।
8. **त्र्यंबकेश्वर ज्योतिर्लिंग –** यह महाराष्ट्र के नासिक जिले में स्थित है। इसके निकट ही ब्रह्मगिरि पर्वत से गोदावरी नदी का उद्गम हुआ है।

9. **वैद्यनाथ ज्योतिर्लिंग –** यह झारखंड के संथाल परगना में स्थित है। इसे चिताभूमि भी कहा जाता है।
10. **नागेश्वर ज्योतिर्लिंग –** यह ज्योतिर्लिंग गुजरात के द्वारका क्षेत्र में स्थित है।

11. **रामेश्वरम ज्योतिर्लिंग –** यह तमिलनाडु के रामेश्वरम में स्थित है और इसे भगवान श्रीराम द्वारा स्थापित माना जाता है।
12. **घृष्णेश्वर ज्योतिर्लिंग –** यह महाराष्ट्र के दौलताबाद के पास स्थित है और 12वां तथा अंतिम ज्योतिर्लिंग माना जाता है।

इन 12 ज्योतिर्लिंगों के दर्शन और पूजन से समस्त पापों का नाश होता है और मोक्ष प्राप्ति का मार्ग प्रशस्त होता है। शिव पुराण में इन ज्योतिर्लिंगों की अद्‌भुत महिमा और कथा का विस्तारपूर्वक उल्लेख मिलता है, जो शिवभक्तों के लिए आध्यात्मिक ज्ञान का भंडार है।

## शिव पुराण का महत्व:

शिव पुराण शिव भक्तों के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण ग्रंथ है, जिसमें परब्रह्म परमेश्वर भगवान शिव के कल्याणकारी स्वरूप का तात्त्विक विवेचन किया गया है। इस ग्रंथ में भगवान शिव की महिमा, रहस्य, उपासना और भक्ति का विस्तारपूर्वक वर्णन मिलता है।

शिव पुराण का पठन और श्रद्धापूर्वक श्रवण सर्वसाधनरूप माना गया है, अर्थात इसके अध्ययन और श्रवण से मोक्ष प्राप्ति का मार्ग प्रशस्त होता है। इस ग्रंथ के अनुसार, जो व्यक्ति सच्चे हृदय से शिव भक्ति करता है, वह श्रेष्ठतम स्थिति को प्राप्त कर शिवपद को प्राप्त करता है।

शिव पुराण में कहा गया है कि निःस्वार्थ भाव से श्रद्धा सहित इसका श्रवण करने से मनुष्य समस्त पापों से मुक्त हो जाता है। इस जीवन में वह श्रेष्ठ भोगों का उपभोग करता है और अंततः शिवलोक की प्राप्ति करता है। इसलिए, यह ग्रंथ न केवल आध्यात्मिक उत्थान का मार्ग दिखाता है, बल्कि शिव भक्ति के माध्यम से परम आनंद और मोक्ष तक पहुँचने का उत्तम साधन भी है।